



मेरी प्यारी मैडम संग चुदाई की मस्ती-2

“मेरी पैंट की जिप कब खुलती, कब मेरा लंड उसके मुँह में चला जाता.. मुझे भी पता नहीं चलता था। वो बड़े प्यार से मेरा लंड चूसती थी.. कहीं वो घिस न जाए। ...”

Story By: (arun22719)

Posted: Sunday, February 26th, 2017

Categories: [गुरु घण्टाल](#)

Online version: [मेरी प्यारी मैडम संग चुदाई की मस्ती-2](#)

मेरी प्यारी मैडम संग चुदाई की मस्ती-2

अब तक आपने पढ़ा..

मैं शिप्रा मेम के साथ उनके डिपार्टमेंट के अन्दर रूम में था और उनकी चूत में उंगली कर रहा था।

अब आगे..

मैंने कंप्यूटर डिपार्टमेंट से निकलना मुनासिब समझा। वहाँ से निकल कर मैं सीधा हॉस्टल आया। मेरा दिल बहुत जोरों से धड़क रहा था और गांड फटी हुई थी, ये सब पहली बार जो किया था.. पर मज़ा भी बहुत आ रहा था।

शाम तक सोने के बाद मेरा बाबू फिर खड़ा हो चुका था। वो पहले से ऐसा नहीं था.. तो इसका पूरा श्रेय शिप्रा को ही देना पड़ेगा जिसने मेरे छोटे से शैतान को जगा दिया था।

अब जैसे ही मैं तैयार हो कर सोच ही रहा था कि करना क्या है, उतने में शिप्रा का कॉल आ गया।

कॉल उठाने पर शिप्रा का पहला सवाल- कहाँ हो तुम ?

मैंने बताया- हॉस्टल में।

उसने कहा- मिलने का मन कर रहा है।

आपको बता दूँ कि हमारे हॉस्टल में अँधेरा होने के बाद लड़का हो या लड़की बाहर नहीं निकल सकते। टाइम जो भी हो। अँधेरा हुआ मतलब हॉस्टल में बंद।

इसके उलट मेरी बचपन से रूल्स तोड़ने की आदत है। जो काम नहीं करने के लिए कहा जाता था.. मेरा वही करने में मन लगता था। मैंने हॉस्टल का गेट खोला और बाहर लॉन में

आ गया। देखा तो शिप्रा अकेली टहल रही थी।

मैंने पूछा- क्यों बुलाया मुझे ?

तो बोलती है- मुझे तुम्हारे पास रहने से अच्छा लगता है।

मैंने गौर किया कि पूरा लॉन खाली था.. दूर-दूर तक एक परिदा भी नहीं दिख रहा था। मैंने जल्दी से अकेले ही एक चक्कर मारा तो देखा सिक्युरिटी गार्ड रूम में दो गार्ड बैठे हैं और बातें कर रहे हैं।

मैंने वापस आकर शिप्रा को बोला- दो सिक्युरिटी गार्ड हैं और पूरा लॉन खाली है।

शिप्रा बोली- मैं शाम को सभी स्टूडेंट्स के जाने के बाद लॉन में टहलने आती हूँ। जब तक मैं यहाँ टहलूंगी.. यहाँ कोई सिक्युरिटी गार्ड गश्त नहीं मारेगा। जब मैं चली जाऊँगी.. तब ये लोग अपने काम पर वापस आ जाएंगे।

मैंने कहा- बाप रे.. फिर तो बड़ा रुआब है तुम्हारा..!

मैं आपको बता दूँ कि शिप्रा मेरे कॉलेज के मुख्य कर्ता-धर्ता अनिल सर की मुँह बोली बहन कहलाती थी तो कॉलेज मैनेजमेंट की नजरों में उसका भी थोड़ा बहुत दबदबा था।

शिप्रा ने कहा- इसी लिए तो तुम्हें यहाँ मिलने के लिए बुलाया है। हम यहाँ आराम से बात कर सकते हैं.. हम दोनों को कोई परेशान नहीं करेगा।

मैं मन ही मन खुश हो रहा था और कोई अच्छी सी जगह तलाश रहा था। इतनी देर में हमारी बातें शुरू हो गई.. और समय कैसे बीत गया.. पता ही नहीं चला।

रात हुई तो मैं अपने रूम में गया। पर पूरी शाम गायब रहने पर भी मेरे रूममेट ने कुछ नहीं पूछा क्योंकि मेरी एक गन्दी आदत थी, कॉलेज से हॉस्टल आने के बाद मैं अपने रूम में कभी नहीं रहता था। मैं हर रोज किसी न किसी दोस्त के रूम में महफ़िल में शामिल रहता

था।

फर्स्ट इयर के सारे लड़कों से मेरी दोस्ती थी और लगभग सारे कमरों में मेरा आना-जाना लगा रहता था।

जैसे-जैसे दिन पार होते गए शिप्रा से मिलने के चलते यहाँ शाम को हॉस्टल में किसी को भी समय नहीं दे पाता था। सभी सोचने लगे कि आखिर मुझे हुआ क्या है।

इधर सुबह शिप्रा से क्लास में मुलाकात होती थी। फिर कॉलेज खत्म होने के बाद उसके कंप्यूटर डिपार्टमेंट में हम दोनों मिलते थे। जहाँ हम लोग एक-दूसरे को जितना हो सके प्यार कर लिया करते थे। प्यार करने का मतलब आप लोग समझ ही रहे होंगे।

फिर शाम को लॉन में मुलाकात होती थी जहाँ हम लोग सिर्फ बातें किया करते थे। ये अब डेली का रूटीन बन चुका था और हम दोनों इसमें काफी खुश थे। किसी को हमारे बारे में कोई खबर न थी। सब कुछ अच्छा चल रहा था।

फिर धीरे-धीरे सिक्युरिटी गार्ड को मुझ पर शक होने लगा। वो इतना हरामी था कि उसने हमारे हॉस्टल के सुपरिन्टेन्डेन्ट को बता दिया होगा।

सुपरिन्टेन्डेन्ट भी देखिए कौन था.. कंप्यूटर डिपार्टमेंट का हेड.. एक नंबर का मादरचोद इंसान।

उसे पता चल गया कि मैं रोज़ शिप्रा के साथ लॉन में शाम बिताता हूँ। पर शिप्रा को वो बहुत मानता था.. पता नहीं क्यों इसलिए मुझ पर अभी तक कोई संकट नहीं गिरा था।

रोज़ शाम को मैं शिप्रा से मिलता और सिक्युरिटी गार्ड देखते रहते। धीरे-धीरे मेरे हॉस्टल में भी खलबली मच गई कि आज कल विक्की हॉस्टल में नहीं दिखता।

कुछ कमीनों ने पीछा किया होगा और सबको पता चल गया कि मैं शाम को शिप्रा के साथ

अपना समय बिताता हूँ। पूरे हॉस्टल में मेरी इज्जत अनिल सर के माफिक हो गई।

धीरे-धीरे मुझे देख कर सभी लड़के किसी न किसी बहाने से हॉस्टल से निकल कर बाहर आते और देखते कि मैं और शिप्रा क्या करते हैं।

कॉलेज की हवाओं में बदलाव आने लगा। धीरे-धीरे सारे लड़के शाम को बाहर लॉन में ही शाम बिताने लगे। बस लड़कियां ही पीछे रह गईं। सारे लड़के मुझे और शिप्रा को साथ में बैठे हुए देखते और कान में खुसफुसाते.. पर इन सब चीजों से ना मुझे कोई फर्क पड़ता था.. न शिप्रा को!

एक दिन एक सिक्युरिटी गार्ड ने आकर मुझे इशारा करते हुए अपनी भाषा में शिप्रा को बोला- इसके कारण सारे लड़के शाम को हॉस्टल से बाहर रहते हैं।

उस समय उस गार्ड की बात को हम दोनों ने टाल दिया।

कुछ दिन बीत गए और अचानक एक शाम हॉस्टल का सुपरिंटेंडेंट आ गया और पूरा हॉस्टल के सारे रूम में गश्त मारने लगा। वो देख रहा था कि सारे बच्चे अपने अपने रूम में हैं या नहीं।

बहुत से लड़के हॉस्टल से बाहर घूम रहे थे। सुपरिन्टेन्डेन्ट ने बाहर से हॉस्टल में ताला मार दिया। जो हॉस्टल के अन्दर है तो ठीक.. जो बाहर है वो गांड मराए। इतने में जो लड़के बाहर बैठे थे.. उन लोगों में खलबली मच गई। सभी हॉस्टल की तरफ भागे और मुझे भी भागने को बोला।

हॉस्टल में कंस्ट्रक्शन का काम चल रहा था.. तो कुछ लड़के गिट्टी बालू का सहारा ले कर हॉस्टल की फर्स्ट फ्लोर पर चढ़ने में कामयाब हो गए। ये सब देख कर एक सिक्युरिटी गार्ड आकर सबको रोकने लगा। इतने में सुपरिंटेंडेंट आ गया.. और सबको डाँटने लगा।

मैं और शिप्रा अभी भी बात कर रहे थे और वो मुझे छेड़ रही थी कि आज तो तुम्हारी छुट्टी समझो।

मैं क्या कम हरामी था, मेरे पास हर चीज़ का इलाज़ था।

हम लोग बात करते-करते वापस आए तो देखा सुपरिंटेंडेंट अभी अभी खड़ा है।

शिप्रा वहाँ से हंसते हुए अपने हॉस्टल चली गई।

सुपरिंटेंडेंट ने मुझसे कुछ नहीं बोला.. पर वो मुझे घूर कर देखे जा रहा था। मुझे पता था ये सब कष्ट उसने मेरे लिए ही उठाया है।

खैर मुझे क्या..

जैसे ही वो गया, सारे लड़के सिक्युरिटी गार्ड से मिन्नतें करने लगे।

मैं हॉस्टल के पीछे नाला से होते हुए अपने रूम के बाथरूम में पहुँचा।

जी हाँ.. मेरा रूम ग्राउंड फ्लोर में हॉस्टल की पीछे साइड था। मैंने वहाँ पहुँच कर अपने रूममेट आनन्द को आवाज़ लगाई। मैंने आनन्द को बोला- बाथरूम की खिड़की का शीशा निकाल।

जैसा मैंने कहा, उसने वैसे किया। मैंने कूद कर खिड़की से अन्दर बाथरूम में छलांग लगाई जिसमें आनन्द ने मेरी मदद की।

आनन्द को भी पता था और वो हँसने लगा, वो बोला- तू साला बहुत कमीना है।

मैंने तुरंत कपड़े बदले और ऐसा शो करने लगा जैसे मैं शाम से ही हॉस्टल में हूँ। हम लोग बातें कर रहे थे.. इतने में सुपरिंटेंडेंट और सिक्युरिटी गार्ड आ गया। वो सब रूम में फिर से झाँक के देख रहा था। मेरी जान में जान आई। मैं भी उन लोगों के साथ बाहर गया तो देखा जो लोग बाहर थे.. वो लोग तो सब फंस गए थे। सुपरिंटेंडेंट के निर्देश पर सबका नाम

रजिस्टर में लिखवाया गया ।

ये सब बात मैंने फ़ोन करके शिप्रा को बताई.. तो पहले तो उसे विश्वास नहीं हुआ कि मैं सुपरिंटेंडेंट से बच निकला ।

जब उसे यकीन हुआ तो खूब हँसने लगी । फिर धीरे-धीरे शाम को हम दोनों का मिलना बंद हो गया और रोज़ कॉलेज खत्म होने के बाद हम लोग शिप्रा के डिपार्टमेंट में मिलने लगे ।

चूँकि शाम को मिलना बंद हो गया तो हम दोनों का मिलन का समय कम हो गया । इससे हम दोनों पहले से ज्यादा व्याकुल से रहने लगे ।

जैसे-जैसे दिन बीतते गए.. हम दोनों की व्याकुलता और उत्तेजना बढ़ती गई क्योंकि हम दोनों हॉस्टल में थे और सिर्फ कॉलेज खत्म होने के बाद मिल पाते थे । धीरे-धीरे हमारे बीच मिलने के बाद बातें कम होने लगी और प्यार ज्यादा होने लगा । भगवान भी हम दोनों का साथ दे रहा था । भीषण गर्मी का मौसम था । क्लास खत्म होने के बाद ना तो टीचर लोग कॉलेज में रुक पाते थे.. ना बच्चे ।

मैं रोज़ दोपहर को कैटीन से खाना खा कर अपनी किताब उठा के शिप्रा के पास चल जाता था । अगर कोई होता भी था तो हम पढ़ाई कर लेते थे.. जब तक कि वो चला न जाए ।

जैसे ही डिपार्टमेंट खाली होता तो वो अन्दर से मेन दरवाज़ा बंद करती और मैं उसको चेयर में बिठा कर उसको पीछे की तरफ धकेल कर उस पर चढ़ जाता था और उसको पूरा मदहोश करके किस करता था । उसके गले को किस करता था.. कंधे को चूमता । अपने हाथों से उसके मम्मों को कपड़े के ऊपर से ही दबाता था.. पर संतुष्टि नहीं मिलती थी । उसको और पीछे धक्का दे कर उसके सलवार में हाथ डाल कर उसकी चूत में लगातार उंगली करता रहता था.. उम्ह... अहह... हय... याह... जब तक उसका शरीर ढीला न पड़

जाता ।

फिर वो खुद गरम होने के बाद मुझे चेयर में बैठा कर मुझे किस करते हुए बिना देरी किए सीधे मेरे लंड तक पहुँच जाती थी । मेरी पैंट की जिप कब खुलती और कब मेरा लंड उसके मुँह में चला जाता.. मुझे भी पता नहीं चलता था । वो बड़े प्यार से मेरा लंड चूसती थी.. जैसे कि मां नानी से उसे यही एक कला विरासत में मिली हो और कहीं वो घिस न जाए । वो इतना प्यार से लंड चूसती थी कि उसे अपने ज़िन्दगी से जाने देना मेरी बस की बात नहीं थी ।

जितनी देर मैं उसके साथ रहता या तो मेरा लंड उसके मुँह में रहता या तो हाथ में ।

आपके ईमेल की प्रतीक्षा रहेगी.. आगे शिप्रा मेम की चुदाई बिना कहानी खत्म होने वाली नहीं है सो मेरे साथ बने रहिए और हिंदी सेक्स स्टोरीज पढ़ते रहिए ।

arun22719@gmail.com

कहानी जारी है ।

Other stories you may be interested in

गर्लफ्रेंड की चुदाई की अधूरी दास्तां

मेरे प्रिय मित्रो, आपने मेरी पिछली कहानी फुफेरी भाभी की हवस और मेरा लंड पढ़ी और पसंद भी की. धन्यवाद. अपनी नयी कहानी शुरू करने से पहले आप लोगों को बता दूं कि यह एक सच्ची घटना है जो मेरे [...]

[Full Story >>>](#)

मम्मीजी आने वाली हैं-1

नमस्कार दोस्तो मेरा नाम महेश कुमार है और मैं एक सरकारी नौकरी करता हूँ। सबसे पहले तो मैं आपने मेरी पिछली कहानी खामोशी : द साईलेन्ट लव को पढ़ा और उसको इतना पसन्द किया उसके लिये आप सभी पाठकों का धन्यवाद [...]

[Full Story >>>](#)

चिकनी चाची और उनकी दो बहनों की चुदाई-10

दोस्तो, मैं आपका साथी जीशान, आपके सामने फिर से आ गया हूँ. चुदाई की कहानी के ये दो आखिरी भाग हैं, अभी 10वें भाग का मजा लीजिएगा. ये दो भाग आपको हमेशा के लिए याद रहेंगे. इस सेक्स कहानी का [...]

[Full Story >>>](#)

छोटा सा हादसा और आंटी की चुदाई

खड़े लौड़ों को और गीली चूतों को मेरा यानि स्वप्निल का प्रणाम. मैं महाराष्ट्र से हूँ और मेरी उम्र अभी 24 साल है. सब लोग अपनी अपनी सच्ची कहानी लिखते हैं तो मैंने सोचा कि क्यों न मैं भी अपनी [...]

[Full Story >>>](#)

भतीजी ने मेरा लंड लिया

प्यारे दोस्तो, मेरा नाम समीर है और मैं मुम्बई में जॉब करता हूँ. मेरी उम्र 40 साल है मगर मेरी बाँडी काफी हद तक फिट है और कहीं से भी मेरी शोप बिगड़ी नहीं हुई है. मेरा पेट भी नहीं [...]

[Full Story >>>](#)

